गुरु नानक - सबद १०५
दाती साहिब संदीआ किआ चलै तिसु नालि ॥
रागु सिरीरागु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ८३

दाती साहिब संदीआ किआ चलै तिसु नालि ॥
इक जागंदे ना लहंनि इकना सुतिआ देइ उठालि ॥१॥

सार: आक्रामक रूप से खोज करना सीमित और दिक्क़त कर सकता है क्योंकि यह मन को लगातार किसी लक्ष्य को पाने के दबाव में डालता है। समझ को ज़बरदस्ती बल से प्राप्त करने की यह कोशिश नज़रिये को संकीर्ण कर देती है जिससे मन अंतर्दृष्टि के बजाय केवल पुष्टि खोजने लगता है। इस तरह की मानसिक पाबंदी की अवस्था में हम असली बारीक संकेतों को नज़रअंदाज़ कर सकते हैं। उत्तर खोजने की निरंतर हड़बड़ी, चेतना को बाहर से बेचैन रखती है और प्रयास स्वयं समझ पर हावी हो जाता है। समझ को स्वाभाविक रूप से विकसित होने देने के बजाय, मन उसे पकड़ने की कोशिश करता है जिससे खोजने वाले और खोजी जाने वाली चीज़ के बीच अलगाव की भावना पैदा होती है। जब हम इस प्रयास को कम करते हैं तब हमारी धारणा विस्तृत होती है और उस खुलेपन के साथ, स्पष्टता स्वाभाविक रूप से सामने आती है जो सहज अंतर्ज्ञान की आवाज़ को सुनने के लिए तैयार होती है।

दाती साहिब संदीआ किआ चलै तिसु नालि ॥
संपूर्ण साधनों का दाता वही परम स्वामी और सर्वव्यापक स्रोत है। तो ऐसा क्या है जिसे हम अपने साथ ले जा सकते हैं जो सच में हमारा हो? यह बताता है कि प्रकृति जो देती है वह एक सार्वभौमिक प्रवाह है जिसे केवल अनुभव किया जा सकता है या उसमें हिस्सा लिया जा सकता है। यह अहंकार ही है जो यह भ्रम पालता है कि वह इन संसाधनों को नियंत्रित कर सकता है या उनका मालिक हो सकता है।

इक जागंदे ना लहंनि इकना सुतिआ देइ उठालि ॥१॥
कुछ लोग जागते रहते हैं फिर भी समझ के बोध को प्राप्त नहीं कर पाते जबकि कुछ ऐसे होते हैं जिनके लिए, जागरूकता हासिल करना उन्हें उनकी नींद से जगा देता है। यह पंक्ति अनुभूति की

विपरीत अवस्थाओं को दर्शाती है, अहंकार से ग्रस्त लोग अनजान रहते हैं जबकि विनम्र लोगों को ज्ञानोदय प्राप्त होता है। (१)

तत्त्व: गुरु नानक हमारी भीतरी दो अवस्थाओं के बीच के गहरे महत्वपूर्ण अंतर पर प्रकाश डालते हैं। जब अहंकार हावी होता है तब हमारा ध्यान स्वयं पर केंद्रित रहता है जो हमारी समझ और जागरूकता को सीमित कर सकता है। इसके विपरीत, विनम्रता का विकास करने से आत्म-केंद्रितता कम हो सकती है जिससे हमारी समझ का विस्तार होता है। यह खुलापन रक्षात्मकता की भावना की जगह ले लेता है जिससे अंतर्दृष्टि श्रेष्ठता की स्थिति से नहीं बल्कि सच्ची ग्रहणशीलता से उत्पन्न होती है जो स्पष्टता की ओर ले जाती है।

पहलकदमी
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com